

---

Tripuratilakam

त्रिपुरातिलकम्

Document Information

---

Text title : tripurAtilakam or kalpashAkhistavah)

File name : tripurAtilakam.itx

Category : devii, dashamahAvidyA, devI, panchadashI

Location : doc\_devii

Transliterated by : PSA Easwaran

Proofread by : PSA Easwaran

Description-comments : Devi book stall, Kodumgallur, Kerala

Source : Sthothra Rathnaakaram, edited by N. Bappuravu, 2010

Latest update : December 27, 2022

Send corrections to : sanskrit@cheerful.com

---

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

**Please help to maintain respect for volunteer spirit.**

---

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

---

December 27, 2022

*sanskritdocuments.org*

---

त्रिपुरातिलकम्



श्रीगणेशाय नमः ।

ॐ क ए ई ल हीं ह स क ह ल हीं स क ल हीं श्रीं ।

कल्पशाखिगणसत्प्रसूनमधुपानकेलिकुतुकभ्रमत्  
षडदारवमनोहरे कनकभूधरे ललितमण्डपे ।

अत्युदारमणिपीठमध्यविनिवासिनीमखिलमोहिनीं  
भक्तियोगसुलभां भजे भुवनमातरं त्रिपुरसुन्दरीम् ॥ १ ॥

एककालसमुदीयमानतरुणार्ककोटिसदृशस्फुर-

द्देहकान्तिभरघोरणीमिलनलोहितीकृतदिगन्तराम् ।

वागधीतविभवां विपद्यभयदायिनीमखिलमोहिनीं

आगमार्थमणिदीपिकामनिशमाश्रये त्रिपुरसुन्दरीम् ॥ २ ॥

ईषदुन्मिषदमर्त्यशाखिकुसुमावलीविमलतारका-

वृन्दसुन्दरसुधांशुखण्डसुभगीकृतातिगुरुकैशिकाम् ।

नीलकुञ्चितघनालकां निटिलभुषणायतविलोचनां

नीलकण्ठसुकृतोन्नतिं सततमाश्रये त्रिपुरसुन्दरीम् ॥ ३ ॥

लक्ष्महीनविधुलक्षनिर्जितविचक्षणाननसरोरुहां

इक्षुकार्मुकशरासनोपमितचिल्लिकायुगमतल्लिकाम् ।

लक्षये मनसि सन्ततं सकलदुष्कृतक्षयविधायिनीं

उक्षवाहनतपोविभूतिमहदक्षरां त्रिपुरसुन्दरीम् ॥ ४ ॥

हीमदप्रमदकामकौतुककृपादिभावपिशुनायत-

स्निग्धमुग्धविशदत्रिवर्णविमलालसालसविलोचनाम् ।

सुन्दराधरमणिप्रभामिलितमन्दहासनवचन्द्रिकां

चन्द्रशेखरकुटुम्बिनीमनिशमाश्रये त्रिपुरसुन्दरीम् ॥ ५ ॥

हस्तमृष्टमणिदर्पणोज्ज्वलमनोज्ञदण्डफलकद्वये

विम्बितानुपमकुण्डलस्तवकमण्डिताननसरोरुहाम् ।


स्वर्णपङ्कजदलान्तरुल्लसितकर्णिकासदृशनासिकां  
 कर्णवैरिसखसोदरीमनिशमाश्रये त्रिपुरसुन्दरीम् ॥ ६ ॥  
 सन्मरन्दरसमाधुरीतुलनकर्मठाक्षरसमुल्लस-  
 न्नर्मपेशलवचोविलासपरिभूतनिर्मलसुधारसाम् ।  
 कम्प्रवक्रपवनाग्रहप्रचलदुन्मिषद्भ्रमरमण्डलां  
 तुर्महै मनसि शर्मदामनिशामम्बिकां त्रिपुरसुन्दरीम् ॥ ७ ॥  
 कम्प्रकान्तिजिततारपूरमणिसूत्रमण्डलसमुल्लसत्  
 कण्ठकाण्डकमनीयतापहतकम्बुराजरुचिडम्बराम् ।  
 किञ्चिदानतमनोहरां सयुगचुम्बिचारुमणिकर्णिकां  
 पञ्चबाणपरिपन्थिपुण्यलहरीं भजे त्रिपुरसुन्दरीम् ॥ ८ ॥  
 हस्तपद्मलसदिक्षुचापसृणिपाशपुष्पविशिखोज्ज्वलां  
 तप्तहेमरचिताभिरामकटकङ्गुलीयवलयदिकाम् ।  
 वृत्तनिस्तुलनिरन्तरालकठिनोन्नतस्तनतुणीभव-  
 न्मत्तहस्तिवरमस्तकां मनसि चिन्तये त्रिपुरसुन्दरीम् ॥ ९ ॥  
 लक्षगाढपरिरम्भतुष्टहरहासगौरतरलोल्लसत्  
 चारुहारनिकराभिरामकुचभारतान्ततनुमध्यमाम् ।  
 रोमराजिललितोदरीमधिकनिम्ननाभिमवलोकये  
 कामराजपरदेवतामनिशमाश्रये त्रिपुरसुन्दरीम् ॥ १० ॥  
 हीरमण्डलनिरन्तरोल्लसितजातरूपमयमेखला  
 चारुकान्तिपरिरम्भसुन्दरसुसूक्ष्मचीनवसनाञ्चिताम् ।  
 मारवीररसचातुरीधृतधुरीणतुङ्गजघनस्थलां  
 धारये मनसि सन्ततं त्रिदशवन्दितां त्रिपुरसुन्दरीम् ॥ ११ ॥  
 सप्तसप्तकिरणानभिज्ञपरिवर्धमानकदलीतनु-  
 स्पार्धिमुग्धमधुरोरुदण्डयुगमन्दितेन्दुधरलोचनाम् ।  
 वृत्तजानुयुगवल्गुभावजितचित्तसम्भवसमुद्रकां  
 नित्यमेव परिशीलये मनसि मुक्तिदां त्रिपुरसुन्दरीम् ॥ १२ ॥  
 कण्ठकाण्डरुचिकुण्डताकरणलीलया सकलकेकिनां  
 जङ्घया तुलितकेतकीमुकुलसङ्घया भृतमुदञ्चिताम् ।  
 अम्बुजोदरविडम्बिचारुपदपल्लवां हृदयदर्पणे  
 विम्बितामिव विलोकये सततमम्बिकां त्रिपुरसुन्दरीम् ॥ १३ ॥

लभ्यमानकमलार्चनप्रणतितत्परैरनिशमास्थया  
कल्पकोटिशतसञ्चितेन सुकृतेन कैश्चन नरोत्तमैः ।  
कल्पशाखिगणकल्प्यमानकनकाभिषेकसुभगाकृतिं  
कल्पयामि हृदि चित्पयोजनवषट्पदीं त्रिपुरसुन्दरीम् ॥ १४ ॥  
हीमिति प्रथितमन्त्रमूर्तिरचलात्मजेत्युदधिकन्यके-  
त्यम्बुजासनकुटुम्बिनीति विविधोपगीतमहिमोदयाम् ।  
सेवकाभिमतकामधेनुमखिलागमावगमवैभवां  
भावयामि हृदि भाविताखिलचराचरां त्रिपुरसुन्दरीम् ॥ १५ ॥  
स्तोत्रराजममुमात्तमोदमहरागमे प्रयतमानसो  
कीर्तयन्निह नरोत्तमो विजितवित्तपो विपुलसम्पदाम् ।  
प्रार्थ्यमानपरिरम्भकेलिरबलाजनैरपगतैषणो  
गात्रमात्रपतनावधावमृतमक्षरं पदमवाप्नुयात् ॥  
इति त्रिपुरातिलकस्तोत्रं समाप्तम् ॥

कल्पशाखिस्तवः

Proofread by PSA Easwaran

---

——  
*Tripuratilakam*

pdf was typeset on December 27, 2022

——

Please send corrections to [sanskrit@cheerful.com](mailto:sanskrit@cheerful.com)

